GEO IAS
It's about quality

6 July 2024

GEO Daily

Daily Current Affairs

GEO IAS

SOURCES

THE HINDU | The Indian EXPRESS JOURNALISM OF COURAGE | pib | PIB | live mint | THE FINANCIAL EXPRESS | ET ECONOMIC TIMES.COM

Date: 6 July 2024

Important News Articles

1. 'सभी के लिए शिक्षा' सुनिश्चित करना - PIB
2. नीति आयोग ने ' सम्पूर्णता अभियान' शुरू किया – ANI
3. केरल के गांव ने गहन जैव विविधता रजिस्टर संकलित किया – द हिंदू
4. रक्षा उत्पादन वर्ष 2023-24 में उच्च स्तर पर पहुंच गया: रक्षा मंत्रालय
5. MSME का केवल 7% ऋण महिलाओं को: RBI– द हिंदू

Editorials, Gists and Explainers

6. आध्यात्मिक अभिविन्यास, धार्मिक गतिविधियां और न्यायालय - हिंदू
7. अग्निवीरों के मुआवज़ा से संबंधित मामला – इंडियन एक्सप्रेस
8. चीन सिंगापुर तक रेल नेटवर्क बनायेगा – इंडियन एक्सप्रेस
9. भारतीय न्याय संहिता (BNS) 2023 – इंडियन एक्सप्रेस
10. असम भारी बारिश के कारण भयानक बाढ़ - इंडियन एक्सप्रेस

Quick Look

1. अपहेलियन – इंडियन एक्सप्रेस
2. बैलेंस ऑफ़ पेमेंट – इंडियन एक्सप्रेस
3. अफ़्रीकी स्वाइन फीवर – इंडियन एक्सप्रेस

महत्वपूर्ण समाचार लेख

सामान्य अध्ययन II

1. 'सभी के लिए शिक्षा' सुनिश्चित करना - PIB

प्रासंगिकता:

जीएस II – स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव संसाधन से संबंधित सामाजिक क्षेत्र/सेवाओं के विकास और प्रबंधन से संबंधित मुद्दे।

प्रीलिम्स टेकअवे

- शिक्षा संबंधी पहल

प्रसंग:

- जनगणना 2011 के अनुसार भारत साक्षरता की एक बड़ी समस्या से जूझ रहा है। 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के 25.76 करोड़ व्यक्ति निरक्षर हैं। इसमें 9.08 करोड़ पुरुष और 16.68 करोड़ महिलाएँ शामिल हैं। साक्षर भारत कार्यक्रम द्वारा की गई प्रगति के बावजूद, जिसने 2009-10 और 2017-18 के बीच 7.64 करोड़ व्यक्तियों को साक्षर के रूप में प्रमाणित किया, भारत में अभी भी अनुमानित 18.12 करोड़ वयस्क निरक्षर हैं। यह पर्याप्त संख्या शिक्षा अंतर को दूर करने और सार्वभौमिक साक्षरता की दिशा में काम करने की महत्वपूर्ण आवश्यकता को उजागर करती है।

ULLAS - साक्षर भारत की ओर एक कदम:

- ULLAS - नव भारत साक्षरता कार्यकम , या न्यू इंडिया लिटरेसी प्रोग्राम (NILP), एक केंद्रीय प्रायोजित पहल है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के साथ संरेखित है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य सभी पृष्ठभूमियों से 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के वयस्कों को सशक्त बनाना है जो औपचारिक शिक्षा से चूक गए, उन्हें समाज में एकीकृत करने और राष्ट्रीय विकास में योगदान करने में मदद करना। ULLAS कार्यात्मक साक्षरता प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें पढ़ना, लिखना और अंकगणित कौशल शामिल हैं, और आजीवन सीखने को बढ़ावा देने के लिए शिक्षार्थियों को आवश्यक जीवन कौशल से लैस करता है। स्वयंसेवा के माध्यम से कार्यान्वित, ULLAS सामाजिक जिम्मेदारी और कर्तव्य की भावना ('कर्तव्य बोध') को प्रोत्साहित करता है, शिक्षार्थियों को DIKSHA पोर्टल और ULLAS मोबाइल ऐप के माध्यम से क्षेत्रीय भाषाओं में शैक्षिक सामग्री तक पहुंचने के लिए प्रेरित करता है। शिक्षार्थियों और स्वयंसेवी शिक्षकों को दिए जाने वाले प्रमाण पत्र आत्मविश्वास और प्रेरणा को बढ़ाते हैं

ULLAS -नव भारत साक्षरता के बारे में कार्यक्रम :

- **परिचय:** ULLAS का तात्पर्य है समाज में सभी के लिए आजीवन शिक्षा को समझना और यह 2022 से 2027 तक क्रियान्वित की जाने वाली एक केंद्र प्रायोजित योजना है।
  - यह कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 की सिफारिशों के अनुरूप है।
- **उद्देश्य:** सभी पृष्ठभूमियों से आने वाले 15 वर्ष या उससे अधिक आयु के वयस्कों को सशक्त बनाना, जो औपचारिक स्कूली शिक्षा से वंचित रह गए।
  - उन्हें समाज में एकीकृत करना ताकि वे देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।
- **योजना के घटक:**
  - आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता
  - महत्वपूर्ण जीवन कौशल
  - बुनियादी शिक्षा
  - व्यावसायिक कौशल
  - पढाई जारी रकना
- **कार्यान्वयन:** ULLAS ऐप स्व-पंजीकरण या सर्वेक्षणकर्ताओं द्वारा शिक्षार्थियों और स्वयंसेवकों के पंजीकरण की सुविधा प्रदान करता है।
  - यह NCERT के दीक्षा पोर्टल पर उपलब्ध विविध शिक्षण संसाधनों से जुड़ने के लिए शिक्षार्थियों के लिए एक डिजिटल प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है।

दीक्षा पोर्टल क्या है?

- **अवलोकन:** दीक्षा स्कूली शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय मंच है, जो शिक्षा मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) की एक पहल है।
  - यह एक ऑनलाइन पोर्टल और मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से स्कूलों के लिए ई-सामग्री प्रदान करता है।

- **सिद्धांतों:** खुली वास्तुकला, खुली पहुंच, खुली लाइसेंसिंग, विकल्प और स्वायत्तता के मूल सिद्धांतों पर विकसित।
  - ओपन-सोर्स प्रौद्योगिकी पर निर्मित, इसे भारत के लिए डिज़ाइन किया गया है और इसमें इंटरनेट-स्तरीय प्रौद्योगिकियों को शामिल किया गया है, जिससे शिक्षण और सीखने के लिए विभिन्न प्रकार के उपयोग और समाधान संभव हो सके।
- **विशेषताएँ:**DIKSHA के मुख्य निर्माण खंडों में राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा वास्तुकला (NDEAR) के कई घटक शामिल हैं, जो सक्रिय पाठ्यपुस्तकों, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों, सामग्री लेखन, सामग्री सोर्सिंग, इंटरैक्टिव क्विज़, प्रश्न बैंक, चैटबॉट, एनालिटिक्स और डैशबोर्ड जैसे सफल उपयोग-मामलों को सक्षम करते हैं।
  - विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए शिक्षण और सीखने में सहायता के लिए, दीक्षा पर बड़ी संख्या में ऑडियोबुक, भारतीय सांकेतिक भाषा (ISL) वीडियो और एक शब्दकोष उपलब्ध हैं।

2. नीति आयोग ने ' सम्पूर्णता अभियान' शुरू किया – ANI

प्रीलिम्स टेकअवे
- नीति आयोग

प्रासंगिकता:
जीएस ll – स्वास्थ्य, शिक्षा, मानव संसाधन से संबंधित सामाजिक क्षेत्र/सेवाओं के विकास और प्रबंधन से संबंधित मुद्दे।

प्रसंग:
- नीति आयोग ने आज संपूर्णता अभियान नामक एक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया है, जिसका उद्देश्य 500 आकांक्षी ब्लॉकों और 112 आकांक्षी जिलों में 12 प्रमुख सामाजिक क्षेत्र संकेतकों में संतृप्ति प्राप्त करना है। स्वास्थ्य, पोषण, कृषि, सामाजिक विकास और शिक्षा सहित विषयों पर केंद्रित यह व्यापक तीन महीने का अभियान इस साल सितंबर तक जारी रहेगा। अभियान के हिस्से के रूप में, जिला और ब्लॉक के अधिकारी निर्वाचित जनप्रतिनिधियों के साथ मिलकर ग्राम सभा, नुक्कड़ नाटक, पौष्टिक सहित जागरूकता गतिविधियाँ आयोजित करेंगे। सभी आकांक्षी ब्लॉकों और जिलों में 12 विषयों पर आहार मेला, स्वास्थ्य शिविर, प्रदर्शनी, पोस्टर निर्माण और कविता प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी।

सम्पूर्णता अभियान का अवलोकन :
- नीति आयोग ने सम्पूर्णता अभियान नामक एक राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया है।
- यह अभियान तीन महीने तक चलेगा और इसका लक्ष्य इस वर्ष सितम्बर तक पूरा करना है।
- इसका उद्देश्य 12 महत्वपूर्ण सामाजिक क्षेत्र संकेतकों में संतृप्ति प्राप्त करना है।

उद्देश्य:
- इसका प्राथमिक उद्देश्य 12 प्रमुख सामाजिक क्षेत्र संकेतकों में संतृप्ति प्राप्त करना है।
- लक्षित क्षेत्रों में 112 आकांक्षी जिले और 500 आकांक्षी ब्लॉक शामिल हैं।

कार्यक्रम विवरण:
- **पृष्ठभूमि:** आकांक्षी जिला कार्यक्रम (ADP): विभिन्न विकासात्मक पहलों के माध्यम से 112 जिलों को बदलने पर ध्यान केंद्रित करने के साथ 2018 में शुरू किया गया।
  - आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम (ABP): देश भर में 500 ब्लॉकों तक विकासात्मक ढांचे का विस्तार करने के लिए 2023 में शुरू किया जाएगा।
  - दोनों कार्यक्रमों का उद्देश्य पहचाने गए क्षेत्रों में विशिष्ट विकासात्मक संकेतकों पर ध्यान देकर सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाना है।
- **आकांक्षी जिला कार्यक्रम (ADP):**
  - लक्ष्य: देश भर में 112 आकांक्षी जिले।
  - फोकस क्षेत्र: स्वास्थ्य, पोषण, कृषि, सामाजिक विकास और शिक्षा।
  - महत्वपूर्ण संकेतक:
  - मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण।
  - स्कूलों में कार्यात्मक बिजली का प्रावधान।
  - 9-11 माह के बच्चों का टीकाकरण।
  - प्रसवपूर्व देखभाल (ANC) के लिए गर्भवती महिलाओं का शीघ्र पंजीकरण।
  - गर्भवती महिलाओं के लिए ICDS पूरक पोषण सुनिश्चित करना।
  - स्कूलों में पाठ्यपुस्तकों का समय पर प्रावधान।

- **आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम (ABP):**
  - लक्ष्य: 329 जिलों में 500 आकांक्षी ब्लॉक।
  - फोकस क्षेत्र: स्वास्थ्य, पोषण, कृषि, बुनियादी ढांचा और सामाजिक विकास।
  - महत्वपूर्ण संकेतक:
  - मधुमेह और उच्च रक्तचाप की जांच।
  - प्रसवपूर्व देखभाल (ANC) के लिए गर्भवती महिलाओं का शीघ्र पंजीकरण।
  - गर्भवती महिलाओं के लिए ICDS पूरक पोषण सुनिश्चित करना।
  - मृदा स्वास्थ्य कार्ड का सृजन।
  - परिक्रमण निधि के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों (SHG) को सहायता।

कार्यान्वयन रणनीति:

- यह अभियान जिला एवं ब्लॉक अधिकारियों, निर्वाचित प्रतिनिधियों और स्थानीय समुदायों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करता है।
- गतिविधियों में जागरूकता बढ़ाने के लिए ग्राम सभाएं, नुक्कड़ नाटक, स्वास्थ्य शिविर, प्रदर्शनियां और प्रतियोगिताएं शामिल हैं।
- इसका उद्देश्य सभी लक्षित ब्लॉकों और जिलों में चिन्हित क्षेत्रों में व्यापक विकास हासिल करना है।

सामान्य अध्ययन III

3. केरल के गांव ने गहन जैव विविधता रजिस्टर संकलित किया – द हिंदू

प्रासंगिकता:

जीएस III - संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण और गिरावट, पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन।

प्रीलिम्स टेकअवे

- समाचार में प्रजातियाँ

प्रसंग:

- केरल के अलप्पुझा में थझाकारा ग्राम पंचायत ने अपनी समृद्ध जैव विविधता का दस्तावेजीकरण और संरक्षण करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। हाल ही में, स्थानीय निकाय ने पीपुल्स बायोडायवर्सिटी रजिस्टर (PBR) का दूसरा खंड संकलित किया, जिसमें क्षेत्र की विविध वनस्पतियों और जीवों का विवरण दिया गया है।

वर्तमान जैव विविधता स्थिति:

- घटती प्रजातियाँ: भारतीय काला कछुआ, भारतीय उद्यान छिपकली, खलिहान उल्लू, भारतीय उड़ने वाली लोमड़ी, मेंहदी और पलाश के पौधों की आबादी में मुख्य रूप से अवैध शिकार और आवास के नुकसान के कारण गिरावट आई है।
- बढ़ती प्रजातियां: इसके विपरीत, रॉक कबूतर, रूफस ट्रीपीज़ और अन्य प्रजातियों की आबादी में वृद्धि देखी गई है।

झाकारा की प्राकृतिक संपत्तियां :

गांव में निम्न बातें प्रचलित हैं:

- 38 पवित्र उपवन
- 10 धान पोल्डर
- 35 तालाब

जैव विविधता संरक्षण में चुनौतियाँ:

- आवास की हानि और विखंडन: वनों की कटाई, कृषि, शहरीकरण और बुनियादी ढांचे के विकास जैसी गतिविधियां प्राकृतिक आवासों को खतरे में डालती हैं, जिससे प्रजातियों के अस्तित्व पर असर पड़ता है।
- जलवायु परिवर्तन: जलवायु परिस्थितियों में परिवर्तन से पारिस्थितिकी तंत्र में परिवर्तन होता है, जिससे प्रजातियों का वितरण और व्यवहार प्रभावित होता है ।

- इन्वेसिव प्रजातियाँ: गैर-देशी प्रजातियों के प्रवेश से स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र बाधित होता है और इससे प्रजातियों का विस्थापन हो सकता है।
- अत्यधिक दोहन: अत्यधिक मछली पकड़ने और लकड़ी की कटाई जैसी असंवहनीय प्रथाएं प्रजातियों की गिरावट में योगदान करती हैं।
- प्रदूषण: वायु, जल और मिट्टी का प्रदूषण वन्यजीवों और आवासों के लिए गंभीर खतरा पैदा करता है।
- जागरूकता का अभाव: जैव विविधता के महत्व के बारे में जनता में अपर्याप्त समझ संरक्षण प्रयासों में बाधा डालती है।
- गरीबी और असमानता: सामाजिक-आर्थिक कारक प्राकृतिक संसाधनों के अतिदोहन को बढ़ावा देते हैं, जिससे जैव विविधता की हानि बढ़ जाती है।

जैव विविधता संरक्षण के लिए संबंधित पहल:

- बजट 2023 में हरित विकास प्राथमिकता: कार्बन तीव्रता को कम करने और हरित रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने पर जोर दिया गया है।
- हरित भारत के लिए राष्ट्रीय मिशन: इसका उद्देश्य बंजर भूमि पर वन क्षेत्र बढ़ाना और मौजूदा वनों की रक्षा करना है।
- ग्रीन क्रेडिट कार्यक्रम: विभिन्न संस्थाओं द्वारा पर्यावरणीय रूप से संधारणीय गतिविधियों को प्रोत्साहित करता है।
- मिष्टी पहल: जलवायु परिवर्तन शमन के लिए मैंग्रोव और तटीय पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करती है।
- PM -प्रणाम: सिंथेटिक इनपुट को कम करने के लिए संधारणीय कृषि गतिविधियों को बढ़ावा देता है।
- अमृत धरोहर योजना: जैव विविधता और आय सृजन के लिए आर्द्रभूमि के इष्टतम उपयोग को प्रोत्साहित करती है।

भविष्य के संरक्षण प्रयासों के लिए रणनीतियाँ:

- विज्ञान-आधारित निगरानी कार्यक्रम: जैव विविधता संरक्षण प्रयासों पर प्रभावी रूप से नज़र रखने के लिए मजबूत निगरानी प्रणालियों को लागू करना।
- पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता: आधुनिक स्थिरता अवधारणाओं को बढ़ावा देना जो जैविक संपदा के पारिस्थितिक, सांस्कृतिक और समाजशास्त्रीय पहलुओं को महत्व देते हैं।
- जल संरक्षण: आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र को सहारा देने के लिए संधारणीय जल प्रबंधन पर जोर देना।
- पारिस्थितिक पुनर्स्थापन: भूदृश्य संपर्कता बढ़ाने के लिए मात्र वृक्षारोपण अभियान के स्थान पर पारिस्थितिक पुनर्स्थापन को प्राथमिकता देना।
- चयनात्मक मैंग्रोव पहल: जैव विविधता और तटीय अखंडता को बनाए रखने के लिए मैंग्रोव संरक्षण के लिए सामरिक रूप से स्थलों का चयन करना।
- सामुदायिक सहभागिता: स्थानीय समुदायों को शामिल करना और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षण योजनाओं में एकीकृत करना।
- अनुसंधान एवं शिक्षा: जैवविविधता अनुसंधान और सार्वजनिक शिक्षा पहलों के लिए महत्वपूर्ण वित्त पोषण की वकालत करना।

निष्कर्ष:

- थजाकारा में पीपुल्स बायोडायवर्सिटी रजिस्टर जैसे प्रयास जैव विविधता संरक्षण में स्थानीय पहलों के महत्व को दर्शाते हैं। जैसा कि भारत वैश्विक जैव विविधता लक्ष्यों को पूरा करने का प्रयास करता है, वैज्ञानिक ज्ञान को सामुदायिक भागीदारी और संधारणीय गतिविधियों के साथ एकीकृत करना देश की जैविक संपदा को संरक्षित करने की कुंजी होगी।
- यह व्यापक दृष्टिकोण न केवल प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा करता है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक संधारणीय भविष्य भी सुनिश्चित करता है।

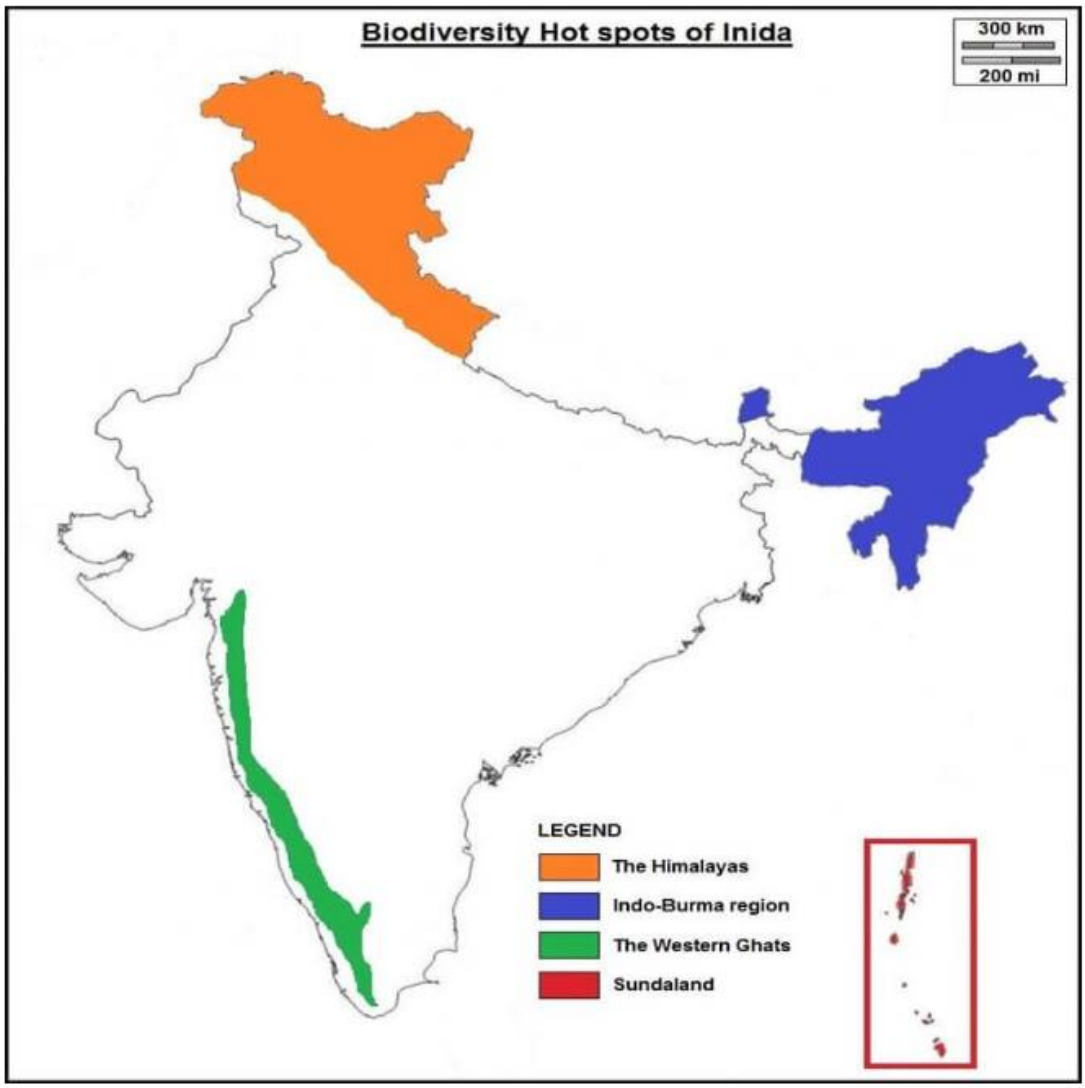

4. रक्षा उत्पादन वर्ष 2023-24 में उच्च स्तर पर पहुंच गया: रक्षा मंत्रालय

प्रासंगिकता:
जीएस III - बुनियादी ढांचा: ऊर्जा, बंदरगाह, सड़क, हवाई अड्डे, रेलवे आदि।

प्रीलिम्स टेकअवे
- रक्षा क्षेत्र - समाचार में नई प्रौद्योगिकियां

प्रसंग:
- वित्त वर्ष 2023-24 के लिए भारत का रक्षा उत्पादन ₹1,26,887 करोड़ के ऐतिहासिक उच्च स्तर पर पहुंच गया है। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, यह पिछले वर्ष के ₹1,08,684 करोड़ से 16.7% की उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाता है। यह उछाल स्वदेशी रक्षा विनिर्माण क्षमताओं को मजबूत करने, विदेशी आयात पर निर्भरता कम करने और रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता बढ़ाने की दिशा में भारत के चल रहे प्रयासों को रेखांकित करता है।

भारत में रक्षा उत्पादन की पृष्ठभूमि:
- **आवश्यकता की प्रारंभिक पहचान (1950-1970 के दशक):** 1962 के भारत-चीन युद्ध और उसके बाद के संघर्षों के बाद भारत का स्वदेशीकरण पर ध्यान केंद्रित बढ़ गया।
- **एकीकृत निर्देशित मिसाइल विकास कार्यक्रम (IGMDP), 1983:** डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के नेतृत्व में, सामरिक मिसाइल प्रणाली विकसित करने के उद्देश्य से 2008 में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।
- **आत्मनिर्भरता सूचकांक और अब्दुल कलाम की पहल (1992):** इसकी शुरुआत 0.3 के आत्मनिर्भरता सूचकांक से की गई, जिसका लक्ष्य सामरिक योजना के माध्यम से 2005 तक 0.7 तक पहुंचना है।
- **उत्तरदायित्व हस्तांतरण (2000 का दशक):** रक्षा उत्पादन विभाग (DDP) से आयुध निर्माणी बोर्ड (OFB) में स्थानांतरित कर दिया गया और सेवाओं ने स्वदेशीकरण के लिए 15 वर्षीय परिप्रेक्ष्य योजनाएँ तैयार कीं गई

- **रक्षा उत्पादन की आवश्यकता:** भारत के रक्षा उत्पादन प्रयास कई महत्वपूर्ण अनिवार्यताओं से प्रेरित हैं:
- **वैश्विक हथियार बाजार में भारत की हिस्सेदारी:** वैश्विक हथियार निर्यात में इसकी हिस्सेदारी केवल 0.2% है; इसका लक्ष्य वैश्विक उपस्थिति बढ़ाना है।
- **भारत हथियारों का सबसे बड़ा आयातक:** प्रयासों के बावजूद, 2018-22 के दौरान वैश्विक हथियार आयात में 11% की हिस्सेदारी के साथ भारत विश्व स्तर पर सबसे बड़ा आयातक बना हुआ है।
- **सैन्य औद्योगिक परिसर का विकास:** राष्ट्रीय सैन्य खर्च बढ़ाने पर ध्यान केन्द्रित करना; जो आत्मनिर्भरता और विदेशी निर्भरता को कम करने के लिए महत्वपूर्ण है।
- **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और स्वतंत्रता:** प्रौद्योगिकी सहयोग और निर्यात के माध्यम से महत्वपूर्ण रक्षा क्षमताओं को सुगम बनाना।
- **निर्यात:** फिलीपींस को ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल जैसी पहल निर्यात क्षमताओं के विस्तार का उदाहरण है।
- **अनुसंधान और विकास:** महत्वपूर्ण अनुसंधान एवं विकास निवेश को बढ़ावा देता है, तथा एक मजबूत रक्षा औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देता है।

रक्षा स्वदेशीकरण की दिशा में सरकार की पहल

हालिया नीतिगत उपाय स्वदेशी रक्षा विनिर्माण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को उजागर करते हैं:

- **रक्षा खरीद नीति, 2016:** अधिग्रहण को सरल बनाने के लिए "खरीदें (भारतीय-IDDM)" जैसी श्रेणियां शुरू की गईं।
- **रक्षा उत्कृष्टता के लिए नवाचार (iDEX), 2018:** रक्षा नवाचार और अनुसंधान एवं विकास में उद्योगों, MSME और स्टार्टअप को शामिल करना।
- **स्प्रिंट चुनौतियां:** भारतीय नौसेना में नई प्रौद्योगिकियों को एकीकृत करने के लिए NIIO और DIO द्वारा प्रस्तुत किया गया।
- **स्वदेशी विनिर्माण:** औद्योगिक लाइसेंसिंग का सरलीकरण, एफडीआई नीतियों का उदारीकरण, तथा घरेलू खरीद हिस्सेदारी में वृद्धि।
- **रक्षा औद्योगिक गलियारे:** क्षेत्रीय रक्षा केंद्रों को बढ़ावा देने के लिए उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में इसकी स्थापना की गई।
- **सकारात्मक स्वदेशीकरण सूचियाँ:** भारतीय खरीद (IDDM) श्रेणी के अंतर्गत घरेलू खरीद को प्राथमिकता दी जाएगी।
- **ई-बिज़ पोर्टल:** दक्षता के लिए औद्योगिक लाइसेंस प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण।
- **सीमा शुल्क और एफडीआई नीति:** एकसमान सीमा शुल्क और बढ़ी हुई FDI सीमा का उद्देश्य प्रतिस्पर्धा के मैदान को समान बनाना है।
- **विक्रेता विकास दिशानिर्देश:** रक्षा विनिर्माण में निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए दिशानिर्देश।
- **रक्षा अधिग्रहण प्रक्रिया 2020:** रक्षा खरीद को सुव्यवस्थित करता है, मेक इन इंडिया पहल का समर्थन करता है।

भारतीय रक्षा उत्पादों के निर्यात में हाल ही में वृद्धि

- **निर्यात की वर्तमान स्थिति और रुझान:** वित्त वर्ष 2022-23 में निर्यात बढ़कर ₹16,000 करोड़ हो गया, जो नीतिगत सुधारों द्वारा समर्थित एक उल्लेखनीय वृद्धि है।
- **देशों के साथ निर्यात सौदे:** 85 से अधिक देशों को निर्यात, जिसमें ब्रह्मोस मिसाइलों के लिए फिलीपींस के साथ सामरिक सौदे भी शामिल हैं।
- **निर्यात में हालिया वृद्धि के कारण:** निजी क्षेत्र की भागीदारी, नीतिगत सुधार और सरलीकृत निर्यात प्रक्रियाओं ने निर्यात वृद्धि में योगदान दिया।

रक्षा उत्पादन और निर्यात के समक्ष चुनौतियाँ:

- **कम रक्षा बजट और आधुनिकीकरण:** बजट संबंधी चिंताएं आधुनिकीकरण प्रयासों और तैयारियों को प्रभावित कर रही हैं।
- **अपर्याप्त बुनियादी ढांचा और क्षमता:** प्रगति के बावजूद, अपर्याप्त बुनियादी ढांचा एक चुनौती बना हुआ है।
- **सीमित निजी क्षेत्र की भागीदारी:** रक्षा उत्पादन में DPSU का प्रभुत्व; निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाने के प्रयास जारी।
- **अनुसंधान एवं विकास में अपर्याप्त निवेश:** दीर्घकालिक सफलता निरंतर अनुसंधान एवं विकास निवेश पर निर्भर करती है।
- **पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं की स्थापना:** रक्षा उत्पादन में उत्पादकता बढ़ाने और लागत कम करने के लिए महत्वपूर्ण।

भविष्य में उठाए जाने वाले कदम:

भारत के रक्षा उत्पादन और निर्यात लक्ष्यों को प्राप्त करने की रणनीतियों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- **उच्च मूल्य वाले हथियार प्रणालियों का निर्यात:** LCA-तेजस और ब्रह्मोस मिसाइलों जैसे उन्नत प्लेटफार्मों के निर्यात पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
- **व्यापक निर्यात सौदे:** प्रशिक्षण और रखरखाव सेवाओं सहित एकीकृत समाधान प्रदान करना।
- **रक्षा ऋण सहायता (LoC) का लाभ उठाना:** रक्षा निर्यात को सुविधाजनक बनाने के लिए मित्र देशों को ऋण सहायता प्रदान करना।
- **निजी क्षेत्र का योगदान बढ़ाएँ:** महत्वपूर्ण परियोजनाओं को निजी कम्पनियों को प्रोत्साहित एवं आवंटित करना।
- **एक समर्पित निर्यात संवर्धन निकाय की स्थापना:** रक्षा निर्यात को प्रभावी ढंग से बढ़ावा देने के प्रयासों का समन्वय करना।
- **रक्षा आधुनिकीकरण कोष:** आधुनिकीकरण प्रयासों में बजट की कमी को पूरा करने के लिए एक गैर-समाप्ति योग्य निधि का प्रस्ताव करना।

5. MSME का केवल 7% ऋण महिलाओं को: RBI– द हिंदू

प्रासंगिकता:

जीएस III - भारतीय अर्थव्यवस्था और योजना, संसाधनों का जुटाव, वृद्धि, विकास और रोजगार से संबंधित मुद्दे।

प्रीलिम्स टेकअवे

- MSME क्षेत्र

प्रसंग:

- हाल ही में एक संबोधन में, रिजर्व बैंक के कार्यकारी निदेशक नीरज निगम ने महिलाओं के सामने ऋण प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डाला, और इसका कारण श्रम बल में उनकी कम भागीदारी को बताया। यह मुद्दा न केवल वित्तीय समावेशन प्रयासों में बाधा डालता है, बल्कि व्यापक आर्थिक विकास को भी बाधित करता है।

भारत में महिला उद्यमियों की स्थिति:

- **बैन एंड कंपनी की रिपोर्ट:** भारत में लगभग 20% उद्यम महिलाओं के स्वामित्व में हैं।
- **भारत में महिला स्टार्टअप इकोसिस्टम रिपोर्ट (WISER):** 2017 से महिलाओं के नेतृत्व वाले स्टार्टअप 18% तक बढ़ गए हैं।
- **महिला उद्यमियों का मास्टरकार्ड सूचकांक:** 65 देशों में भारत 57वें स्थान पर है, जो सुधार की पर्याप्त गुंजाइश दर्शाता है।
  - महिलाओं के नेतृत्व वाले स्टार्टअप्स के लिए वित्त पोषण 2022 में कुल का 18% तक बढ़ गया।
- **वर्तमान परिदृश्य:** भारत में लगभग 14% महिला उद्यमी हैं, जिनकी कुल संख्या 8.05 मिलियन है।
  - MSME क्षेत्र में 20% से अधिक हिस्सेदारी महिलाओं की है।
  - भारत में महिला उद्यमियों का महत्व
- **आधारभूत भूमिका:** महिलाएं सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सतत विकास का अभिन्न अंग हैं।
- **आर्थिक लैंगिक असमानता:** महिलाएं पुरुषों की अपेक्षित जीवन भर की आय का केवल दो-तिहाई ही अर्जित करती हैं, जिससे आर्थिक असमानताओं को कम करने की आवश्यकता पर प्रकाश पड़ता है।
- **रूढ़िवादिता को चुनौती देना:** पारंपरिक धारणाओं से ऊपर उठना और महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना सामाजिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है।
- **आर्थिक लक्ष्य:** महिला उद्यमियों को समर्थन देना महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत का लक्ष्य 2024-25 तक 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था बनना है।
- **वित्तीय प्रबंधन:** वित्तीय निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी धन प्रबंधन और उत्तराधिकार पैटर्न पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है।
- **प्रभाव और सशक्तिकरण:** शिक्षित महिलाएं अपने निर्णयों के माध्यम से भावी पीढ़ियों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
  - महिला उद्यमियों को समर्थन देने वाली सरकारी पहल
- **संवैधानिक प्रावधान:** भारत का संविधान लैंगिक समानता सुनिश्चित करता है तथा राज्य को महिलाओं के पक्ष में कदम उठाने का अधिकार देता है।
- **कानूनी ढांचा:** पांचवीं पंचवर्षीय योजना (1974-79) के बाद से विभिन्न कानूनों और नीतियों का उद्देश्य महिला उद्यमियों को सशक्त बनाना रहा है।

प्रमुख योजनाएँ:

- **मिशन शक्ति:** कौशल विकास, क्षमता निर्माण और माइक्रोक्रेडिट पहुंच के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- **समर्थ योजना:** महिलाओं को स्वरोजगार और स्वतंत्रता के अवसर प्रदान करता है।
- **मुद्रा ऋण योजना:** पार्लर और ट्यूशन सेंटर जैसे छोटे व्यवसाय शुरू करने वाली महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करता है ।
- **अन्नपूर्णा योजना और उद्योगिनी योजना:** खानपान व्यवसायों को समर्थन प्रदान करें तथा ग्रामीण महिलाओं में उद्यमशीलता को बढ़ावा दें।

भारत में महिला उद्यमियों के समक्ष चुनौतियाँ

- **स्वायत्तता और प्रतिनिधित्व:** महिलाओं को आर्थिक स्वायत्तता प्राप्त करने में बाधाओं का सामना करना पड़ता है तथा निर्णय लेने वाली भूमिकाओं में उनका प्रतिनिधित्व कम है।
- **सामाजिक दबाव:** सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंड अक्सर महिलाओं को उद्यमशील उद्यम अपनाने से हतोत्साहित करते हैं।
- **वित्त तक पहुंच:** औपचारिक वित्तीय संस्थाओं और संपार्श्विक तक सीमित पहुंच महत्वपूर्ण बाधाएं उत्पन्न करती है।
- **तकनीकी प्रदर्शन:** ग्रामीण महिलाओं को प्रौद्योगिकी के सीमित ज्ञान के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी उद्यमशीलता की सफलता में बाधा आती है।

भारत में महिला उद्यमिता को मजबूत करने की दिशा में आगे की राह

- **सहायता प्रणाली को उन्नत करें:** महिला उद्यमियों के लिए पूंजी तक पहुंच बढ़ाना तथा वित्तपोषण एवं विकास में सहायता प्रदान करना।
- **लैंगिक-तटस्थ नीतियाँ:** आर्थिक विकास के लिए लैंगिक-तटस्थ प्रयास के रूप में उद्यमशीलता को बढ़ावा देना।
- **असमानताओं का समाधान:** वित्तपोषण और अवसरों में लैंगिक अंतर को पाटने के लिए हस्तक्षेप लागू करना।
- **जागरूकता और शिक्षा:** वित्तीय निर्णय लेने में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए महिलाओं में वित्तीय साक्षरता और जागरूकता बढ़ाना।

निष्कर्ष:

- भारत में महिला उद्यमिता न केवल आर्थिक विकास को गति देती है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक का काम भी करती है। सरकारी पहलों से निरंतर समर्थन और बढ़ी हुई जागरूकता के साथ, महिलाओं की उद्यमशीलता की सफलता के लिए अनुकूल माहौल को बढ़ावा देना व्यापक आर्थिक और सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है।

एडिटोरियल, जिस्ट, एक्सप्लेनेर

6. आध्यात्मिक अभिविन्यास, धार्मिक गतिविधियां और न्यायालय - हिंदू

प्रासंगिकता: भारत का संविधान - ऐतिहासिक आधार, विकास, विशेषताएं, संशोधन, महत्वपूर्ण प्रावधान और मूल संरचना।
प्रसंग:

- धर्म और आध्यात्मिकता लंबे समय से मानव समाज को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं, जो अक्सर कानूनी ढाँचों के साथ जुड़े होते हैं। एडिलेड कंपनी ऑफ़ जेहोवाज़ विटनेस इंक बनाम कॉमनवेल्थ (1943) में मुख्य न्यायाधीश लैथमैन की टिप्पणी धार्मिक गतिविधियों पर दृष्टिकोणों में भिन्नता को रेखांकित करती है। भारत में, यह संबंध जटिल है, जिसमें सुप्रीम कोर्ट (SC) के हाल के कानूनी फैसलों ने महत्वपूर्ण न्यायशास्त्र को उजागर किया है।

धर्म आधारित प्रश्नों पर सर्वोच्च न्यायालय के प्रमुख निर्णय:

- **अहमदाबाद सेंट जेवियर्स कॉलेज बनाम गुजरात राज्य (1974):** सर्वोच्च न्यायालय ने शैक्षणिक संस्थानों के प्रशासन में अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा के लिए अनुच्छेद 30 पर जोर दिया।
  - शिक्षा में बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक समूहों के बीच समानता सुनिश्चित की गई।

- **बिजोए इमैनुएल बनाम केरल राज्य (1987):** व्यक्तिगत धार्मिक विश्वासों का सम्मान करते हुए, स्कूलों में अनिवार्य राष्ट्रगान गाने के खिलाफ फैसला देकर अनुच्छेद 19(1)(A) और अनुच्छेद 25(1) के तहत स्वतंत्रता को बरकरार रखा।
- **इस्माइल फ़ारूक़ी बनाम भारत संघ (1994):** उन्होंने कहीं भी नमाज अदा करने की स्वतंत्रता की पुष्टि की तथा इस्लाम के आचरण के अनिवार्य अंग के रूप में मस्जिद की धारणा को अस्वीकार कर दिया।
  - संवैधानिक सिद्धांतों को कायम रखते हुए गैर-मस्जिद स्थानों पर प्रार्थना की अनुमति दी गई।
- **शफीन जहान बनाम अशोकन केएम एवं अन्य । (2018):** धार्मिक मतभेदों के बावजूद विवाह करने के अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी गई।
  - वैवाहिक निर्णयों में व्यक्तिगत स्वायत्तता को बरकरार रखा।
- **शायरा बानो बनाम भारत संघ (2017):** तीन तलाक को असंवैधानिक घोषित किया गया, जो मुस्लिम महिलाओं के लिए लैंगिक समानता और न्याय की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
  - इस प्रथा को इस्लामी आस्था के लिए गैर-आवश्यक बताकर अस्वीकार कर दिया गया।
- **मोहम्मद सिद्दीकी थ्रू एलआरएस बनाम महंत सुरेश दास (2019):** राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद भूमि विवाद को हिंदू समुदाय के पक्ष में, कब्जे और निर्बाध पूजा के अधिकार के आधार पर सुलझाया गया।
  - एक लम्बे समय से चले आ रहे धार्मिक विवाद को कानूनी स्पष्टता के साथ सुलझाया गया।
- **प्रबंध समिति अंजुमन इंतेज़ामिया मसाजिद वाराणसी बनाम श्रीमती राखी सिंह एवं अन्य (2023):** ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों पर चिंताओं को दूर करते हुए, वाराणसी में ज्ञानवापी मस्जिद के पुरातत्व सर्वेक्षण को जारी रखने की अनुमति दी गई ।
  - धार्मिक भावनाओं के साथ विरासत संरक्षण को संतुलित करने में न्यायपालिका की भूमिका को प्रदर्शित किया।

आगे की राह

- अनेक धार्मिक विवाद समाधान की प्रतीक्षा में हैं, जैसे केरल के छात्रों के बीच हिजाब विवाद और मथुरा कृष्ण जन्मभूमि मामला।
- ये मामले धार्मिक गतिविधियों को संवैधानिक आदेशों के साथ सामंजस्य स्थापित करने में जारी चुनौतियों को रेखांकित करते हैं।
- धार्मिक महत्व के मामलों में सद्भाव और न्याय बनाए रखने के लिए सर्वोच्च न्यायालय का निरंतर हस्तक्षेप महत्वपूर्ण है।
- निष्कर्ष के तौर पर, धार्मिक मुद्दों पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले विविध धर्मों का सम्मान करते हुए धर्मनिरपेक्षता के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। ये फैसले न केवल कानूनी मिसाल कायम करते हैं बल्कि सामाजिक मानदंडों को भी प्रभावित करते हैं, जिससे धार्मिक स्वतंत्रता और संवैधानिक अधिकारों के बीच एक नाजुक संतुलन सुनिश्चित होता है।

7. अग्निवीरों के मुआवज़ा से संबंधित मामला – इंडियन एक्सप्रेस

प्रासंगिकता: विभिन्न क्षेत्रों में विकास के लिए सरकारी नीतियां और हस्तक्षेप तथा उनके डिजाइन और कार्यान्वयन से उत्पन्न होने वाले मुद्दे।

प्रसंग:

- हाल ही में लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी द्वारा लगाए गए आरोपों के बाद अग्निवीर अजय कुमार के परिवार को दिए जाने वाले मुआवजे के मुद्दे पर विवाद छिड़ गया है। उन्होंने दावा किया कि परिवार को सरकार से पर्याप्त वित्तीय सहायता नहीं मिली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इसका खंडन करते हुए कहा कि कार्रवाई में मारे गए अग्निवीरों को मुआवजे के रूप में 1 करोड़ रुपये मिलते हैं। हालांकि, बाद में जब सेना ने घोषणा की कि मुआवजा वास्तव में 1.65 करोड़ रुपये था, तो विसंगतियां सामने आईं। इस घटना ने अग्निपथ योजना के कार्यान्वयन और पारदर्शिता के बारे में चिंताओं को उजागर किया है।

अग्निपथ योजना के बारे में :

- केंद्र सरकार द्वारा 2022 में लॉन्च किया जाएगा।
- इसका उद्देश्य सशस्त्र बलों में अधिकारी रैंक से नीचे के व्यक्तियों की भर्ती करना है।
- चार वर्ष के अनुबंध पर युवा, फिट सैनिकों की तैनाती पर जोर दिया गया है, जिससे अग्रिम पंक्ति की क्षमताओं में वृद्धि होगी।

पात्रता मापदंड:

- आयु आवश्यकता: 17.5 से 21 वर्ष।
- दोनों के लिए खुला है, लेकिन निर्दिष्ट आयु सीमा के अधीन।
- अर्धवार्षिक रैलियों के माध्यम से भर्ती; कठोर चयन मानदंड बनाए रखा गया।

वेतन और लाभ:

- अग्निवीरों के परिवारों को एक करोड़ रुपये का एकमुश्त मुआवजा ।
- अतिरिक्त लाभों में उस अवधि के लिए पूर्ण वेतन शामिल है, जब सैनिक सेवा नहीं कर सका।
- सैन्य सेवा के कारण हुई विकलांगता के प्रतिशत के आधार पर 44 लाख रुपये तक की विकलांगता क्षतिपूर्ति।

विशिष्ट विशेषताएं:

- अग्निवीरों को सेवानिवृत्ति के बाद पेंशन नहीं मिलती, सिवाय उन 25% लोगों के जो चार वर्ष की नियमित सेवा के बाद इसके लिए पात्र हो सकते हैं।
- इसका उद्देश्य स्थायी बल के स्तर और रक्षा पेंशन बिल को कम करना है।

भर्ती की वर्तमान स्थिति:

- सेना: 40,000 अग्निवीरों के दो बैचों को प्रशिक्षित किया गया, 20,000 का तीसरा बैच प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा है।
- नौसेना: 7,385 के तीन बैचों ने प्रशिक्षण पूरा कर लिया।
- भारतीय वायु सेना (IAF): 4,955 अग्निवीरों को प्रशिक्षित किया गया।

अग्निपथ योजना क्यों शुरू की गई:

- **उद्देश्य:** सशस्त्र बलों के कार्मिकों की औसत आयु 32 वर्ष से घटाकर 26 वर्ष करना।
  - सशस्त्र बलों को एक युवा, तकनीकी रूप से उन्नत इकाई में बदलना।
  - उन्नत कौशल और अनुशासन के साथ अग्निवीरों को नागरिक समाज में परिवर्तित करने में सुविधा प्रदान करना ।
- **सरकार का दृष्टिकोण:** अनुमानित लाभों में कार्यबल की गुणवत्ता, उत्पादकता और सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि में सुधार शामिल हैं।
  - इसका उद्देश्य सशस्त्र बलों का आधुनिकीकरण करना तथा समकालीन रक्षा आवश्यकताओं के साथ उन्हें संरेखित करना है।

विरोध और चिंताएं:

- **आलोचना:** आलोचकों का तर्क है कि अग्निवीर नियमित सैनिकों के समान ही कर्तव्य निभाते हैं, लेकिन उन्हें कम वेतन, सुविधाएं और कैरियर की संभावनाएं मिलती हैं।
  - हाल ही में शहीद अग्निवीरों के परिवारों के लिए नियमित सैनिकों के समान मुआवजे की मांग की गई है।
- **सार्वजनिक असंतोष:** कुछ लोग सैन्य सेवा को आर्थिक स्थिरता और सामाजिक उन्नति का मार्ग मानते हैं।
  - अग्निवीरों के मनोबल और प्रतिबद्धता को कमजोर करने वाला माना जाता है ।

निष्कर्ष और आगे की राह:

- अग्निपथ योजना एक महत्वपूर्ण सुधार प्रयास का प्रतिनिधित्व करती है जिसका उद्देश्य भारत के सशस्त्र बलों को युवा कर्मियों के साथ पुनर्जीवित करना है, साथ ही लंबे समय से चली आ रही वित्तीय चुनौतियों का समाधान करना है। हालाँकि, मुआवजे को लेकर हाल ही में हुए विवाद नीति कार्यान्वयन में अधिक स्पष्टता और समानता की आवश्यकता को उजागर करते हैं। जैसे-जैसे योजना विकसित होती जा रही है, हितधारकों के लिए लाभ, कैरियर की प्रगति और अग्निवीरों और उनके परिवारों के लिए समर्थन से संबंधित चिंताओं को दूर करना महत्वपूर्ण है। पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करना जनता के विश्वास को बनाए रखने और राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने में इस परिवर्तनकारी पहल की प्रभावशीलता के लिए महत्वपूर्ण होगा।

8. चीन सिंगापुर तक रेल नेटवर्क बनायेगा – इंडियन एक्सप्रेस

प्रासंगिकता: विकसित और विकासशील देशों की नीतियों और राजनीति का भारत के हितों, भारतीय प्रवासियों पर प्रभाव।

प्रसंग:

- पिछले सप्ताह मलेशिया की अपनी यात्रा के दौरान, चीनी प्रधानमंत्री ली कियांग ने कहा था कि चीन "क्षेत्रीय संपर्क बढ़ाने" के लिए दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों मलेशिया, लाओस और थाईलैंड में अपनी रेलवे परियोजनाओं को जोड़ने की योजना का अध्ययन करने को तैयार है।

परिचय:

- दक्षिण-पूर्व एशिया में अपने रेलवे नेटवर्क का विस्तार करने की चीन की महत्वाकांक्षी योजनाओं ने क्षेत्रीय संपर्क और आर्थिक एकीकरण पर उनके संभावित प्रभाव के कारण महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है। मलेशिया की अपनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री ली कियांग के हालिया प्रस्ताव ने क्षेत्रीय बुनियादी ढाँचे के संबंधों को बढ़ाने में चीन की सामरिक रुचि को रेखांकित किया है, विशेष रूप से ईस्ट कोस्ट रेल लिंक (ECRL) जैसी परियोजनाओं के माध्यम से।

ECRL परियोजना अवलोकन:

- निवेश: कोटा भारू को पोर्ट क्लैंग से जोड़ने वाली लगभग 10 बिलियन डॉलर की परियोजना।
- उद्देश्य: आर्थिक लाभ बढ़ाना, माल ढुलाई को सुविधाजनक बनाना और पर्यटन को बढ़ावा देना।
- महत्व: इसे चीन और मलेशिया के बीच एक प्रमुख आर्थिक सहयोग पहल बताया गया है।

ECRL परियोजना की चुनौतियाँ और प्रगति:

- प्रारंभ और निलंबन: 2017 में शुरू हुआ लेकिन वित्त पोषण के मुद्दों और उच्च लागत के कारण रोक दिया गया, पूर्व मलेशियाई पीएम महाथिर मोहम्मद द्वारा निलंबित कर दिया गया।
- राजनीतिक प्रभाव: वित्तीय घोटालों सहित घरेलू राजनीतिक कारकों ने परियोजना में देरी को प्रभावित किया।
- पुनः आरंभ: लागत कम करने और परिचालन को सुव्यवस्थित करने के लिए संशोधित समझौते के तहत 2020 में पुनः आरंभ किया गया।

अखिल एशियाई रेल नेटवर्क अवधारणा:

- ऐतिहासिक संदर्भ: औपनिवेशिक युग के प्रस्तावों से उत्पन्न इस नेटवर्क का उद्देश्य म्यांमार, लाओस और वियतनाम के माध्यम से कुनमिंग को थाईलैंड, मलेशिया और सिंगापुर से जोड़ना है।
- लक्ष्य: बेहतर कनेक्टिविटी के माध्यम से क्षेत्रीय आर्थिक विकास और सहयोग को बढ़ाना।

पैन-एशियन रेलवे परियोजना की वर्तमान स्थिति:

- परिचालन खंड: लाओस-चीन खंड 2021 से चालू है, जो प्रमुख क्षेत्रों को जोड़ता है।
- चुनौतियाँ: थाईलैंड में उच्च लागत और सरकारी अनिच्छा के कारण देरी की संभावना है।
- व्यवहार्यता संबंधी चिंताएं: विभिन्न रेलवे ट्रैक मानक और प्रतिस्पर्धी परिवहन मोड परियोजना की व्यवहार्यता को चुनौती देते हैं।

क्षेत्रीय संपर्क में चीन की रुचि:

- भू-राजनीतिक संदर्भ: बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) से पहले, दक्षिण-पूर्व एशिया में चीन की भागीदारी आर्थिक संबंधों और भौगोलिक निकटता से प्रेरित थी।
- व्यापार संबंध: आसियान देशों के साथ व्यापक व्यापार, 2023 में 911.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचना।
- सामरिक लक्ष्य: दक्षिण चीन सागर में क्षेत्रीय विवादों के बीच क्षेत्रीय संबंधों को मजबूत करने के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश का उपयोग करना।

निष्कर्ष:

- मलेशिया के रास्ते सिंगापुर तक अपने रेलवे नेटवर्क का विस्तार करने का चीन का प्रस्ताव दक्षिण-पूर्व एशिया में क्षेत्रीय एकीकरण और आर्थिक साझेदारी को गहरा करने की उसकी व्यापक रणनीति को दर्शाता है। हालांकि इस परियोजना के सामने चुनौतियां हैं, लेकिन आर्थिक विकास और कनेक्टिविटी के मामले में इसके संभावित लाभ चीन के क्षेत्रीय कूटनीति प्रयासों में इसके सामरिक महत्व को रेखांकित करते हैं।

9. भारतीय न्याय संहिता (BNS) 2023 – इंडियन एक्सप्रेस

प्रासंगिकता: भारत का संविधान - ऐतिहासिक आधार, विकास, विशेषताएं, संशोधन, महत्वपूर्ण प्रावधान और मूल संरचना।
प्रसंग:

- भारतीय न्याय संहिता (BNS) 2023 की शुरुआत के साथ भारत के कानूनी परिदृश्य में एक बड़ा बदलाव आया है , जो सदियों पुरानी भारतीय दंड संहिता (IPC), साक्ष्य अधिनियम और दंड प्रक्रिया संहिता से एक महत्वपूर्ण बदलाव है। इस बदलाव का उद्देश्य देश के आपराधिक न्याय ढांचे को समकालीन बनाना, लंबे समय से चली आ रही कमियों को दूर करना और वर्तमान सामाजिक-आर्थिक और तकनीकी वास्तविकताओं के साथ तालमेल बिठाना है।

भारतीय न्याय संहिता 2023 के बारे में :

- IPC का प्रतिस्थापन: BNS 2023 IPC का स्थान लेता है, जिसमें मूलभूत तत्वों को बरकरार रखते हुए अद्यतन प्रावधान पेश किए गए हैं। इसका उद्देश्य कानूनी वर्गीकरण को सुव्यवस्थित करना और विभिन्न अपराधों के लिए दंड को बढ़ाना है।
- आधुनिकीकरण लक्ष्य: साइबर अपराध और संगठित अपराध जैसी समकालीन चुनौतियों से निपटने के लिए डिज़ाइन किया गया, BNS 2023 नए अपराधों को शामिल करता है और किए गए अपराधों की गंभीरता के अनुसार दंड को संरेखित करता है।

- विधायी समीक्षा: गृह मामलों की स्थायी समिति द्वारा अनुमोदित BNS 2023 को व्यापक कानूनी सुधार सुनिश्चित करने के लिए सावधानीपूर्वक जांच से गुजरना पड़ा।

भारतीय न्याय संहिता 2023 की मुख्य विशेषताएं :

- शरीर के विरुद्ध अपराध: हत्या, हमला और आत्महत्या के लिए उकसाने पर IPC के प्रावधानों को बरकरार रखा गया है। संगठित अपराध और आतंकवाद के विरुद्ध नए अपराध पेश किए गए हैं।
- महिलाओं के विरुद्ध यौन अपराध: आयु सीमा और दंड में संशोधन करते हुए मौजूदा IPC प्रावधानों को बरकरार रखा गया है। धोखे से यौन संबंध बनाने के विरुद्ध उपाय प्रस्तुत किए गए हैं।
- राजद्रोह: राष्ट्रीय एकता या संप्रभुता को खतरा पहुंचाने वाले कृत्यों के विरुद्ध प्रावधानों के साथ IPC के राजद्रोह कानूनों को प्रतिस्थापित करता है।
- आतंकवाद और संगठित अपराध: आतंकवाद को व्यापक रूप से परिभाषित करता है और संगठित अपराध के लिए विशिष्ट प्रावधान प्रस्तुत करता है, तथा मौजूदा कानून की खामियों को दूर करता है।
- मॉब लिंचिंग: भीड़ द्वारा की जाने वाली हिंसा को कठोर दंड के साथ संबोधित किया जाता है, जिसका उद्देश्य सांप्रदायिक तनाव को रोकना और सार्वजनिक सुरक्षा सुनिश्चित करना है।
- सर्वोच्च न्यायालय का संरेखण: व्यभिचार को अपराध से मुक्त करने तथा मृत्युदंड के विकल्प उपलब्ध कराने जैसे मुद्दों पर सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों के साथ संरेखित।

भारतीय न्याय संहिता 2023 की प्रयोज्यता से संबंधित मुद्दे :

- कार्यान्वयन चुनौतियाँ: विभिन्न न्यायक्षेत्रों में नए कानूनी प्रावधानों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए कानून प्रवर्तन और न्यायिक कर्मियों को प्रशिक्षित करने में चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया है।
- मानसिक बीमारी: मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अधिनियम, 2017 के अद्यतनों को प्रतिबिंबित करते हुए, आपराधिक जिम्मेदारी के लिए मानसिक बीमारी को परिभाषित करने में परिवर्तन प्रस्तुत करता है।
- आतंकवाद की परिभाषा: व्यापक परिभाषाओं पर आलोचनाएं, जिनमें गैर-आतंकवाद-संबंधी गतिविधियां शामिल हो सकती हैं, जिससे स्पष्ट कानूनी विभेद की आवश्यकता होती है।
- आयु संबंधी विशिष्टताएं: विभिन्न अपराधों के लिए आयु सीमा में असंगतता, कानूनी सुरक्षा में एकरूपता के बारे में चिंताएं उत्पन्न करती है।
- अपराधों का दोहराव: मौजूदा कानूनों के साथ अतिव्यापन तथा अनावश्यकता से बचने के लिए कानूनी ढांचे को सुव्यवस्थित करने की आवश्यकता।

निष्कर्ष और आगे की राह:

- भारतीय न्याय संहिता (BNS) 2023 भारत की आपराधिक न्याय प्रणाली को आधुनिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। हालांकि यह महत्वपूर्ण कमियों को दूर करता है और समकालीन प्रावधानों को पेश करता है, लेकिन एक समान आवेदन सुनिश्चित करने और बारीक कानूनी जटिलताओं को संबोधित करने में चुनौतियां बनी हुई हैं। आगे बढ़ते हुए, एक संतुलित और सुसंगत कानूनी ढांचा हासिल करने के लिए निरंतर मूल्यांकन और परिशोधन आवश्यक होगा जो न्याय को बनाए रखता है और विकसित होते सामाजिक मानदंडों को दर्शाता है।

10. असम भारी बारिश के कारण भयानक बाढ़ - इंडियन एक्सप्रेस

प्रासंगिकता: आपदा एवं आपदा प्रबंधन।

प्रसंग:

- असम इस समय भारी बारिश के कारण आई भयंकर बाढ़ से जूझ रहा है, जिसके कारण ब्रह्मपुत्र नदी में उफान आ गया है। इस प्राकृतिक आपदा ने सात जिलों के 33,760 से अधिक बच्चों सहित लगभग 1.34 लाख लोगों को बुरी तरह प्रभावित किया है।

NDMA के अनुसार बाढ़ प्रवण क्षेत्र:

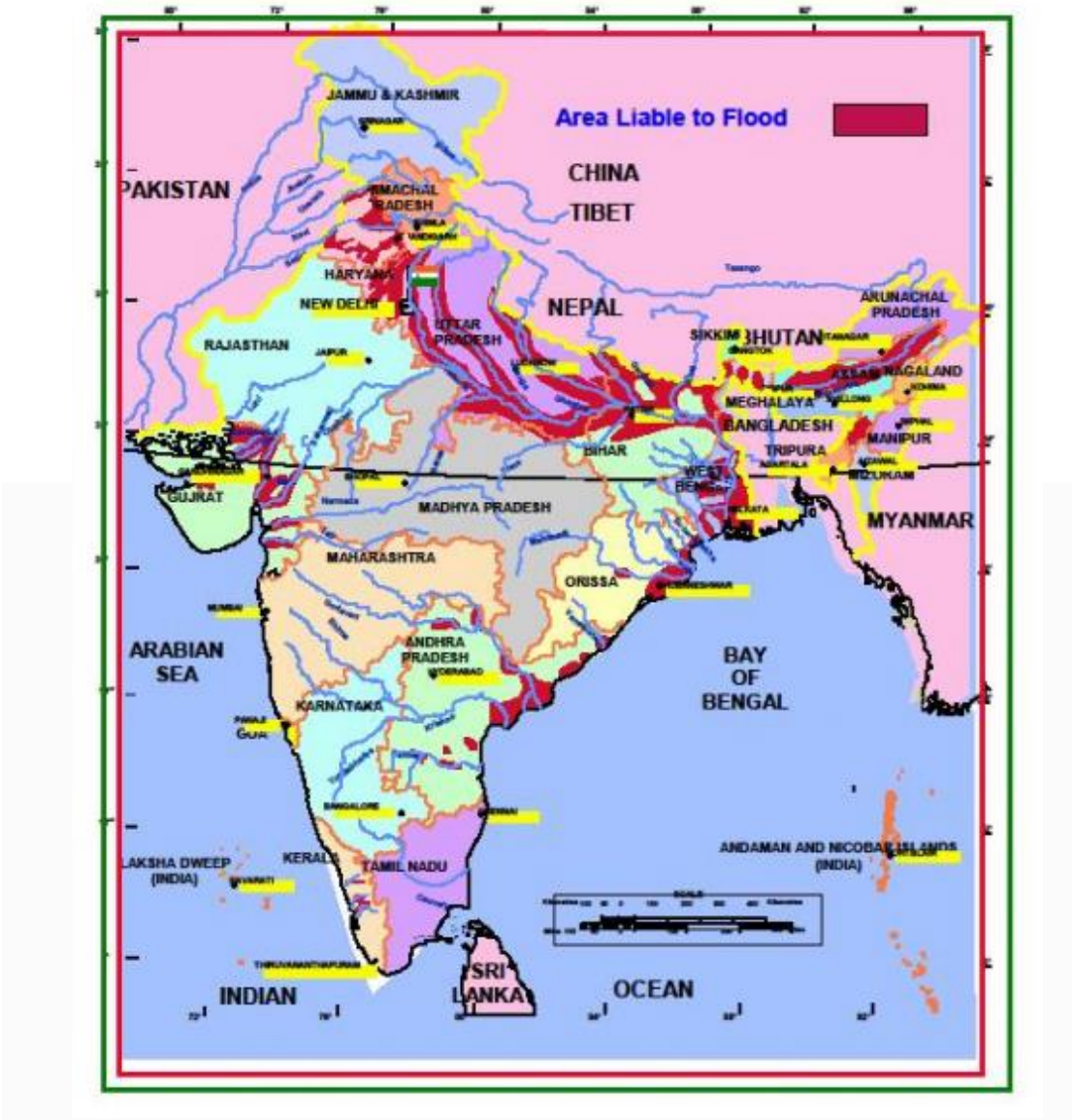

भारत में बाढ़ के कारण:

- **भारी वर्षा:** जून से सितम्बर तक मानसून का मौसम तीव्र एवं अनियमित वर्षा लेकर आता है।
  - अत्यधिक वर्षा से मृदा अवशोषण और जल निकासी प्रणाली प्रभावित हो सकती है, जिससे बाढ़ आ सकती है।
  - उदाहरण: जुलाई 2023 में दिल्ली में भारी वर्षा हुई, जिससे व्यापक बाढ़ आई।
- **बर्फ पिघलना:** बर्फ और ग्लेशियर पिघलने से नदियों का जल स्तर बढ़ जाता है।
  - पानी के अचानक प्रवाह के कारण निचले इलाकों में बाढ़ आ सकती है।
  - उदाहरण: उत्तराखंड को फरवरी 2021 में विनाशकारी बाढ़ का सामना करना पड़ा।
- **चक्रवात और तूफान:** तटीय क्षेत्र चक्रवातों और तूफानी लहरों से बाढ़ के प्रति संवेदनशील होते हैं।
  - तेज़ हवाएं और कम वायुमंडलीय दबाव समुद्र के स्तर को बढ़ा देते हैं, जिससे बाढ़ आ जाती है।
  - उदाहरण: मई 2020 में आए चक्रवात अम्फान ने पश्चिम बंगाल और ओडिशा को बुरी तरह प्रभावित किया।
- **नदी का अतिप्रवाह:** नदी के ऊपरी हिस्से में अत्यधिक अंतर्वाह या निचले हिस्से में प्रतिबंधित बहिर्वाह के कारण नदी का अतिप्रवाह हो सकता है।
  - इसमें भारी वर्षा, बर्फ पिघलना, चक्रवात, बांध, बैराज या गाद जमा होना शामिल हैं।
  - उदाहरण: यमुना नदी 2023 में ऊपरी वर्षा और अप्रभावी बैराजों के कारण उफान पर होगी।

भारत में बाढ़ के प्रभाव:

- **मानवीय नुक्सान:** डूबना, चोट लगना, संक्रमण और बिजली का झटका लगना मृत्यु के सामान्य कारण हैं।
  - भारत में बाढ़ से औसतन हर साल लगभग 1,600 लोगों की जान जाती है।
  - उदाहरण: उत्तर भारत में 2023 की शुरुआत में बाढ़ से संबंधित 60 से अधिक मौतें होने की पुष्टि हुई।
- **प्रॉपर्टी को नुकसान:** मकान, सड़क, पुल और उपयोगिता जैसी बुनियादी संरचना को व्यापक क्षति पहुँचती है।
  - कृषि संबंधी नुकसान और सार्वजनिक संपत्ति को हुई क्षति महत्वपूर्ण आर्थिक प्रभाव हैं।
  - उदाहरण: लाल किला जैसी दिल्ली की ऐतिहासिक इमारतें 2023 की बाढ़ में क्षतिग्रस्त हो गईं।
- **लोगों का विस्थापन:** बाढ़ के कारण लोगों को अपना घर छोड़कर जाना पड़ता है, जिससे आजीविका बाधित होती है और मानवीय संकट पैदा होता है।
  - भोजन, पानी, स्वच्छता और स्वास्थ्य देखभाल जैसी आवश्यक चीजों तक पहुंच बाधित हो रही है।
  - उदाहरण: 2023 में बाढ़ के कारण हिमाचल प्रदेश और पंजाब में हजारों लोग विस्थापित हुए।
- **वातावरण संबंधी मान भंग:** बाढ़ से मिट्टी का कटाव होता है, आवासों में परिवर्तन होता है, जल स्रोत प्रदूषित होते हैं तथा भूस्खलन का खतरा बढ़ता है।
  - नदियों और आर्द्रभूमियों में पारिस्थितिक संतुलन ख़तरे में है, जिससे जैव विविधता प्रभावित हो रही है।
  - उदाहरण: गंगा डॉल्फिन जैसी लुप्तप्राय प्रजातियां बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में खतरे में हैं।
- **आर्थिक नुकसान:** बाढ़ से आर्थिक गतिविधियां बाधित होती हैं, तथा कृषि, उद्योग, व्यापार और पर्यटन प्रभावित होते हैं।
  - भारत में बाढ़ के कारण होने वाली वार्षिक प्रत्यक्ष हानि 14 बिलियन डॉलर आंकी गई है।
  - उदाहरण: पर्यटन क्षेत्र और सांस्कृतिक विरासत बाढ़ से होने वाली क्षति से ग्रस्त हैं।

भारत में बाढ़ प्रबंधन के समाधान:

संरचनात्मक उपाय:

- **भंडारण जलाशय:** कृत्रिम जलाशय अधिकतम प्रवाह के दौरान अतिरिक्त जल का भंडारण करते हैं।
  - कम प्रवाह अवधि के दौरान पानी छोड़ने से बाढ़ के चरम को प्रबंधित करने में मदद मिलती है।
  - उदाहरण: भाखड़ा नांगल बांध बाढ़ नियंत्रण और सिंचाई में सहायक है।
- **तटबंध:** नदियों के किनारे ऊंची संरचनाएं जल प्रवाह को सीमित करती हैं तथा समीपवर्ती क्षेत्रों की रक्षा करती हैं।
  - नदी की वहन क्षमता को बढ़ाता है और अतिरिक्त पानी को सुरक्षित क्षेत्रों की ओर निर्देशित करता है।
  - उदाहरण: बिहार में कोसी तटबंध परियोजना का उद्देश्य नदी की बाढ़ को रोकना है।
- **विचलन:** बाढ़ के जोखिम को प्रबंधित करने के लिए संरचनाएं पानी को एक चैनल से दूसरे चैनल की ओर पुनर्निर्देशित करती हैं।
  - अतिरिक्त जल को कम संवेदनशील क्षेत्रों या भंडारण जलाशयों में स्थानांतरित करना।
  - उदाहरण: इंदिरा गांधी नहर राजस्थान में सिंचाई के लिए पानी का मार्ग परिवर्तित करती है।

गैर-संरचनात्मक उपाय:

- **बाढ़ का पूर्वानुमान और चेतावनी:** पूर्व चेतावनी प्रणालियाँ बाढ़ की भविष्यवाणी करने के लिए मौसम विज्ञान और जल विज्ञान संबंधी आंकड़ों का उपयोग करती हैं।
  - बाढ़ प्रबंधन के लिए समय पर निकासी और परिचालन योजना की सुविधा प्रदान करता है।
  - उदाहरण: केन्द्रीय जल आयोग पूरे भारत में बाढ़ की चेतावनी जारी करता है।
- **बाढ़ मैदान क्षेत्रीकरण:** जोखिम को न्यूनतम करने के लिए नियामक उपाय बाढ़-प्रवण क्षेत्रों में विकास को प्रतिबंधित करते हैं।
  - आर्द्रभूमि और वनों जैसे प्राकृतिक बाढ़ अवरोधकों के संरक्षण को बढ़ावा देता है।
  - उदाहरण: NDMA के दिशानिर्देश बाढ़-प्रवण भूमि को प्रतिबंधित क्षेत्रों में वर्गीकृत करते हैं।

- **बाढ़ बीमा:** वित्तीय उपाय बीमा योजनाओं के माध्यम से बाढ़ से संबंधित नुकसान की भरपाई करते हैं।
  - राहत प्रयासों पर सरकारी बोझ कम करता है तथा जोखिम न्यूनीकरण को प्रोत्साहित करता है।
  - उदाहरण: प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना बाढ़ के कारण होने वाले कृषि नुकसान को कवर करती है।
- **बाढ़ जागरूकता और शिक्षा:** सामाजिक पहल समुदायों को बाढ़ के जोखिम और तैयारी के उपायों के बारे में शिक्षित करती है।
  - बाढ़ की आपातस्थिति के दौरान लचीलापन पैदा करता है और प्रतिक्रिया क्षमताओं में सुधार करता है।
  - उदाहरण: NDMA बाढ़ प्रबंधन पर जागरूकता अभियान चलाता है।

आगे की राह

- **बाढ़ प्रबंधन के लिए एकीकृत दृष्टिकोण:** प्रभावी बाढ़ नियंत्रण के लिए संरचनात्मक और गैर-संरचनात्मक उपायों का मिश्रण लागू करें।
  - स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप ग्रे, ब्लू और ग्रीन बुनियादी ढांचे के समाधान को शामिल करें।
- **जल संसाधन प्रबंधन:** बाढ़ के पानी को भविष्य में उपयोग के लिए एक संसाधन के रूप में देखें तथा जल सुरक्षा पहल को बढ़ावा दें।
  - पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देते हुए बाढ़ प्रबंधन के लिए नदी बेसिन दृष्टिकोण अपनाएं।
- **उन्नत बुनियादी ढांचा:** बढ़ती जलवायु परिवर्तनशीलता और बाढ़ के जोखिम को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए जल-बुनियादी ढांचे को उन्नत करने में निवेश करें।
  - इन व्यापक रणनीतियों को अपनाकर भारत बाढ़ के प्रभाव को कम कर सकता है, जान-माल की सुरक्षा कर सकता है तथा जलवायु चुनौतियों के बीच सतत विकास को बढ़ावा दे सकता है।

GEO IAS
It's about quality

फैक्ट फटाफट

1. अपहेलियन – इंडियन एक्सप्रेस

वास्तव में अपहेलियन और पेरिहेलियन क्या हैं?

- अपसौर (अपसौर): यह प्रतिवर्ष 4 जुलाई के आसपास घटित होता है, जो पृथ्वी की अण्डाकार कक्षा में वह बिन्दु होता है जहां वह सूर्य से सबसे दूर होती है।
- पृथ्वी से सूर्य की दूरी: लगभग 152.5 मिलियन किलोमीटर ।
- पेरिहेलियन: यह प्रत्येक वर्ष 3 जनवरी के आसपास होता है, जो उस क्षण का प्रतिनिधित्व करता है जब पृथ्वी सूर्य के सबसे निकट होती है।
- पृथ्वी से सूर्य की दूरी: लगभग 147.5 मिलियन किलोमीटर ।

अपसौर और उपसौर के महत्व को समझना

- अपसौर और उपसौर के बीच सूक्ष्म किन्तु महत्वपूर्ण दूरी का अंतर, लगभग 5 मिलियन किलोमीटर , पृथ्वी की जलवायु और मौसमी विविधताओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

केप्लर का दूसरा नियम और गति अंतर

- ग्रहीय गति के संबंध में जोहान्स केप्लर का दूसरा नियम पृथ्वी की बदलती कक्षीय गति को स्पष्ट करता है:
- उपसौर (पेरिहेलियन): पृथ्वी सूर्य के चारों ओर अपनी कक्षा में सबसे तेज गति से घूमती है।
- अपसौर: पृथ्वी अपने कक्षीय पथ में सबसे धीमी गति से चलती है।

पृथ्वी के मौसमों पर प्रभाव:

- मौसमी प्रभाव: आम धारणा के विपरीत, पृथ्वी पर मौसमी परिवर्तन मुख्य रूप से इसकी धुरी के झुकाव से नियंत्रित होते हैं। हालाँकि, अपसौर और उपसौर के कारण सौर विकिरण में होने वाले मामूली बदलाव वैश्विक स्तर पर सूक्ष्म जलवायु पैटर्न में योगदान करते हैं।

निष्कर्ष और आगे की राह:

- पृथ्वी की कक्षीय यांत्रिकी और जलवायु तथा मौसमों पर इसके प्रभाव को व्यापक रूप से समझने के लिए अपहेलियन और पेरिहेलियन को समझना महत्वपूर्ण है। यूपीएससी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले उम्मीदवारों को इन खगोलीय सिद्धांतों का गहन अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि वे न केवल वैज्ञानिक समझ को समृद्ध करते हैं, बल्कि स्थलीय घटनाओं के साथ आकाशीय गति के अंतर्संबंध को भी उजागर करते हैं। इन अवधारणाओं में आगे की खोज न केवल अकादमिक खोज में सहायता करती है, बल्कि हमारे सौर मंडल के गतिशील संतुलन के लिए गहरी प्रशंसा को भी बढ़ावा देती है।

2. बैलेंस ऑफ़ पेमेंट – इंडियन एक्सप्रेस

बैलेंस ऑफ़ पेमेंट (BoP) की विशेषताएँ:

- व्यापक कवरेज: इसमें व्यक्तियों, निगमों और सरकारों द्वारा किए गए लेनदेन शामिल हैं।
- आदर्श संतुलन: सैद्धांतिक रूप से इसका लक्ष्य शून्य संतुलन होता है, जहां अंतर्वाह बहिर्वाह के बराबर होता है, हालांकि व्यावहारिक असमानताएं आम हैं।
- अधिशेष और घाटे की पहचान: यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि किसी देश के अंतर्राष्ट्रीय लेन-देन में अधिशेष (सकारात्मक शेष) है या घाटा (नकारात्मक शेष) है।

गणना और घटक:

- चालू खाता: इसमें वस्तुओं और सेवाओं का व्यापार, आय और चालू स्थानान्तरण शामिल हैं।
- वित्तीय और पूंजी खाते: वित्तीय निवेश और पूंजी हस्तांतरण का रिकॉर्ड रखें।
- समग्र संतुलन: आदर्श रूप से शून्य, लेकिन व्यवहार में शायद ही कभी प्राप्त किया जा सके, जिससे आर्थिक शक्तियों और कमजोरियों के बारे में जानकारी मिलती है।

भुगतान संतुलन घाटे को समझना:

- परिभाषा: यह तब होता है जब कोई देश अपने निर्यात की तुलना में अधिक वस्तुओं, सेवाओं और पूंजी का आयात करता है।
- परिणाम: विदेशी मुद्रा भंडार का उपयोग करके या बाहरी वित्तीय सहायता प्राप्त करके इसका प्रबंधन किया जा सकता है।

भुगतान संतुलन अधिशेष को समझना:

- परिभाषा: यह तब होता है जब कोई देश आयात की तुलना में अधिक वस्तुओं, सेवाओं और पूंजी का निर्यात करता है।
- लाभ: घरेलू निवेश के लिए पूंजी उपलब्ध कराता है तथा अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय स्थिति को मजबूत बनाता है।

BoP गणना के उद्देश्य और महत्व :

- आर्थिक संकेतक: किसी देश की आर्थिक स्थिति और राजकोषीय स्वास्थ्य को दर्शाता है।
- मुद्रा मूल्य निहितार्थ: मुद्रा मूल्यांकन को प्रभावित करता है, आर्थिक नीतियों को प्रभावित करता है।
- नीतिगत निर्णय: व्यापार और वित्तीय नीतियों के निर्माण में सरकारों का मार्गदर्शन करता है।
- विश्लेषणात्मक उपकरण: आर्थिक संबंधों और प्रवृत्तियों का विश्लेषण करने के लिए महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करता है।

वर्तमान समय में संदर्भ और महत्व:

- वर्तमान वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में, भुगतान संतुलन का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि देश जटिल व्यापार गतिशीलता और वित्तीय चुनौतियों से निपटते हैं। भुगतान संतुलन डेटा को समझना और उसकी व्याख्या करना नीति निर्माताओं और अर्थशास्त्रियों को सूचित निर्णय लेने में मदद करता है जो राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष और आगे की राह:

- निष्कर्ष में, आर्थिक विश्लेषण और नीति निर्माण में शामिल किसी भी व्यक्ति के लिए भुगतान संतुलन की व्यापक समझ अपरिहार्य है। जैसे-जैसे देश जटिल वैश्विक व्यापार नेटवर्क में शामिल होते जा रहे हैं, भुगतान संतुलन एक महत्वपूर्ण दिशासूचक के रूप में कार्य करता है, जो राष्ट्रों को सतत आर्थिक विकास और स्थिरता की ओर मार्गदर्शन करता है। आगे बढ़ते हुए, भुगतान संतुलन डेटा की निरंतर निगरानी और सटीक व्याख्या प्रभावी आर्थिक रणनीतियों को आकार देने और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण बनी रहेगी।

3. अफ़्रीकी स्वाइन फीवर – इंडियन एक्सप्रेस

ASF के बारे में:

- यह अत्यधिक संक्रामक और घातक रोग है जो घरेलू और जंगली सूअरों को प्रभावित करता है।
- लक्षणों में तेज बुखार, अवसाद, भूख न लगना, रक्तस्राव , उल्टी और दस्त शामिल हैं ।
- 1920 के दशक में अफ्रीका में उत्पन्न हुआ ASF 2007 से अफ्रीका, एशिया और यूरोप के कई देशों में फैल चुका है।
- मृत्यु दर अत्यंत उच्च है, जो 95% से 100% तक है।
- यह केवल पशुओं में फैलता है और मनुष्यों को प्रभावित नहीं करता।
- विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (OIE) के स्थलीय पशु स्वास्थ्य कोड में सूचीबद्ध।

चिकत्सीय संकेत:

- तीव्र रूप जिसमें तेज बुखार, भूख न लगना और रक्तस्राव संबंधी लक्षण होते हैं।
- अन्य लक्षणों में उल्टी, दस्त (कभी-कभी खूनी) और सांस लेने में तकलीफ शामिल हो सकते हैं।

संचरण:

- संक्रमित सूअरों, उनके शरीर के तरल पदार्थ या मल के साथ सीधा संपर्क ।
- दूषित उपकरण या कार्मिक के माध्यम से अप्रत्यक्ष संचरण।
- संक्रमित सूअर के मांस या उत्पादों का सेवन।
- टिक्स जैसे जैविक वाहक भी संक्रमण में योगदान दे सकते हैं।

क्लासिकल स्वाइन फीवर (ASF):

- **ASF के बारे में:** इसे हॉग कॉलरा के नाम से भी जाना जाता है, जो पेस्टीवायरस के कारण होता है , जो मवेशियों और भेड़ों में रोग पैदा करने वाले विषाणुओं से काफी मिलता-जुलता है।
  - मृत्यु दर 100% तक पहुंच जाती है, जिससे यह वैश्विक स्तर पर आर्थिक रूप से हानिकारक हो जाती है।
- **नव गतिविधि:** भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने एक सेल कल्चर ASF वैक्सीन विकसित की है, जो टीकाकरण के 14 दिनों के भीतर 18 महीने तक सुरक्षात्मक प्रतिरक्षा उत्पन्न करती है।
- **निष्कर्ष और आगे की राह:** ASF और ASF के प्रकोप ने सूअर उद्योग में मजबूत जैव सुरक्षा उपायों और प्रभावी टीकों की महत्वपूर्ण आवश्यकता को रेखांकित किया है। चूंकि ये रोग वैश्विक सूअर आबादी के लिए खतरा बने हुए हैं, इसलिए शोध और टीका विकास में प्रगति महत्वपूर्ण है। सरकारों और हितधारकों को सख्त रोग नियंत्रण रणनीतियों को लागू करने और सूअर क्षेत्र की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। निवारक उपायों को प्राथमिकता देकर और शोध में निवेश करके, वैश्विक समुदाय पशु स्वास्थ्य और कृषि अर्थव्यवस्थाओं पर इन विनाशकारी बीमारियों के प्रभाव को कम कर सकता है।

प्रीलिम्स ट्रैक

Q1. चीन द्वारा शुरू की गई ईस्ट कोस्ट रेल लिंक (ECRL) परियोजना के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इस परियोजना का उद्देश्य मलेशिया के कोटा भारू को पश्चिमी तट पर स्थित पोर्ट क्लैंग से जोड़ना है।
2. ECRL परियोजना को मुख्यतः आसियान देशों द्वारा उठाई गई पर्यावरणीय चिंताओं के कारण निलंबित कर दिया गया था।
3. ECRL को चीन और मलेशिया के बीच सबसे बड़ी आर्थिक सहयोग पहल माना जाता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

A. केवल 1 और 2
B. केवल 1 और 3
C. केवल 2 और 3
D. 1, 2, और 3

Q2. भारतीय न्याय संहिता (BNS) 2023 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें :

1. यह भारतीय दंड संहिता (IPC) का स्थान लेगा और इसका उद्देश्य भारत के आपराधिक कानून को आधुनिक बनाना है।
2. BNS आतंकवाद और संगठित अपराध जैसे अपराधों के लिए विशिष्ट प्रावधान प्रस्तुत करता है।
3. 'राजद्रोह' शब्दावली के अंतर्गत अपराध BNS के तहत दंडनीय अपराध बने रहेंगे।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

A. केवल 1
B. केवल 1 और 2
C. केवल 2 और 3
D. 1, 2, और 3

Q3. भारत में बाढ़ के प्राथमिक कारण क्या हैं?

1. मानसून के मौसम में भारी वर्षा
2. बर्फ और ग्लेशियरों का पिघलना
3. चक्रवातों के कारण तूफानी लहरें
4. भूकंप के कारण नदियों में बाढ़

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

A. केवल 1, 2 और 3
B. केवल 1 और 3
C. केवल 2, 3 और 4
D. 1, 2, 3 और 4

Q4. भारत में बाढ़ प्रबंधन के लिए निम्नलिखित में से कौन सा एक गैर-संरचनात्मक उपाय है?

A. भंडारण जलाशयों का निर्माण
B. नदियों के किनारे तटबंधों का निर्माण
C. बाढ़ पूर्वानुमान और चेतावनी प्रणाली स्थापित करना
D. बाढ़ मैदान ज़ोनिंग को लागू करना

Q5. भुगतान संतुलन (BoP) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भुगतान संतुलन एक विशिष्ट समय सीमा के भीतर किसी देश के सभी अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय लेनदेन को रिकॉर्ड करता है।
2. भुगतान संतुलन अधिशेष यह दर्शाता है कि किसी देश का कुल आयात उसके निर्यात से अधिक है।
3. भुगतान संतुलन में चालू खाता, वित्तीय खाता और पूंजी खाता शामिल होते हैं।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

A. केवल 1 और 2
B. केवल 2 और 3
C. केवल 1 और 3
D. 1, 2, और 3

Q6. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भुगतान संतुलन घाटे को सबसे अच्छी तरह से परिभाषित करता है?

A. यह तब होता है जब किसी देश का कुल निर्यात उसके आयात से अधिक होता है।
B. यह उस स्थिति से उत्पन्न होता है जहां कोई देश निर्यात की तुलना में अधिक वस्तुओं, सेवाओं और पूंजी का आयात करता है।
C. यह दर्शाता है कि किसी देश के विदेशी मुद्रा भंडार में अत्यधिक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण वृद्धि हुई है।
D. यह उस परिदृश्य को संदर्भित करता है जहां किसी देश का अन्य देशों के साथ वित्तीय लेनदेन पूरी तरह से संतुलित होता है।

Q7. अफ्रीकी स्वाइन फीवर (ASF) और क्लासिकल स्वाइन फीवर (CSF) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

1. अफ्रीकी स्वाइन फीवर (ASF) मनुष्यों में फैल सकता है।
2. क्लासिकल स्वाइन फीवर (ASF) एक ऐसे विषाणु के कारण होता है जो गोजातीय विषाणुजनित दस्त और बॉर्डर रोग का कारण बनता है।
3. ए.एस.एफ. की मृत्यु दर लगभग 100% है।
4. भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान ने हाल ही में क्लासिकल स्वाइन फीवर के लिए एक जीवित क्षीणित टीका विकसित किया है।

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

A. केवल 1 और 2
B. केवल 2 और 3
C. केवल 3 और 4
D. केवल 1, 3 और 4

Q8. साक्षरता अभियान का उद्देश्य क्या है? भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया कौन सा कार्यक्रम?

A. 15 वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करना
B. 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के वयस्कों में साक्षरता को बढ़ावा देना
C. ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण को प्रोत्साहित करना
D. शहरी स्कूलों में डिजिटल शिक्षण प्लेटफॉर्म स्थापित करना

Q9. नीति आयोग द्वारा शुरू किए गए सम्पूर्णता अभियान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. इसका लक्ष्य 500 आकांक्षी ब्लॉकों और 112 आकांक्षी जिलों में 12 प्रमुख सामाजिक क्षेत्र संकेतकों में संतृप्ति प्राप्त करना है।
2. यह अभियान कैलेंडर वर्ष के अंत तक जारी रहेगा।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

A. केवल 1
B. केवल 2
C. 1 व 2 दोनों
D. न तो 1 और न ही 2

Q10. नीति आयोग द्वारा लक्षित आकांक्षी जिला कार्यक्रम के तहत निम्नलिखित में से कौन सा प्रमुख संकेतक नहीं है?

A. कार्यात्मक बिजली वाले स्कूल
B. पूर्णतः प्रतिरक्षित बच्चे (9-11 माह)
C. मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार किए गए
D. मधुमेह और उच्च रक्तचाप की जांच

प्रीलिम्स ट्रैक उत्तर

उत्तर : 1 विकल्प B सही है

व्याख्या :

- कथन 1 सही है क्योंकि ECRL परियोजना का उद्देश्य वास्तव में कोटा भारू को पोर्ट क्लैंग से जोड़ना है। कथन 2 गलत है क्योंकि परियोजना को पर्यावरण संबंधी चिंताओं के कारण नहीं बल्कि वित्तपोषण और लागत संबंधी मुद्दों के कारण निलंबित किया गया था। कथन 3 सही है।

उत्तर : 2 विकल्प B सही है

व्याख्या :

- कथन 1 सही है: BNS 2023 वास्तव में अद्यतन प्रावधानों के साथ IPC को प्रतिस्थापित करता है।
- कथन 2 सही है: BNS आतंकवाद और संगठित अपराध जैसे अपराधों के लिए नए प्रावधान पेश करता है।
- कथन 3 गलत है: BNS राजद्रोह के अपराध को हटाता है और राष्ट्रीय एकता और संप्रभुता को खतरे में डालने से संबंधित नए प्रावधान पेश करता है।
- इसलिए, विकल्प (B) सही उत्तर है।

उत्तर : 3 विकल्प A सही है

व्याख्या :

- कथन 1 सही है: भारी मानसून वर्षा अक्सर मृदा अवशोषण और जल निकासी प्रणालियों की क्षमता से अधिक हो जाती है, जिससे बाढ़ आती है।
- कथन 2 सही है: बर्फ पिघलने और ग्लेशियर पिघलने से नदियों में जल स्तर बढ़ जाता है, जिससे नीचे की ओर बाढ़ आ जाती है।
- कथन 3 सही है: चक्रवात भारी बारिश और तूफानी लहरें लेकर आते हैं, जो तटीय क्षेत्रों को जलमग्न कर सकते हैं।
- कथन 4 गलत है: भूकंप सीधे तौर पर नदी के अतिप्रवाह का कारण नहीं बनते हैं; भारत में बाढ़ मुख्य रूप से वर्षा, बर्फ पिघलने और चक्रवातों के कारण होती है।

उत्तर : 4 विकल्प D सही है

व्याख्या :

- विकल्प (a), भंडारण जलाशयों का निर्माण, एक संरचनात्मक उपाय है जो अतिरिक्त पानी को संग्रहीत करके बाढ़ नियंत्रण में मदद करता है।
- विकल्प (B), तटबंधों का निर्माण, एक अन्य संरचनात्मक उपाय है जो बाढ़ को रोकने के लिए पानी को चैनलों के भीतर सीमित करता है।
- विकल्प (c), बाढ़ पूर्वानुमान और चेतावनी प्रणाली, एक गैर-संरचनात्मक उपाय है जो बाढ़ की भविष्यवाणी करने और समय पर निकासी की सुविधा के लिए डेटा का उपयोग करता है।
- विकल्प (D), बाढ़ मैदान ज़ोनिंग, सही उत्तर है क्योंकि इसमें बाढ़-प्रवण क्षेत्रों में भूमि उपयोग को विनियमित करना शामिल है ताकि क्षति को कम किया जा सके और आर्द्रभूमि और जंगलों जैसे प्राकृतिक बाढ़ बफर्स के संरक्षण को बढ़ावा दिया जा सके।

उत्तर : 5 विकल्प C सही है

व्याख्या :

- कथन 1 सही है: भुगतान संतुलन (BoP) वास्तव में एक निर्दिष्ट अवधि में किसी देश के सभी अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय लेनदेन को ट्रैक करता है।
- कथन 2 गलत है: BoP अधिशेष तब होता है जब किसी देश का निर्यात उसके आयात से अधिक होता है।
- कथन 3 सही है: भुगतान संतुलन चालू खाता, वित्तीय खाता और पूंजी खाता से बना होता है, जो सामूहिक रूप से विभिन्न प्रकार के अंतर्राष्ट्रीय लेनदेन को दर्शाता है।

उत्तर : 6 विकल्प B सही है

व्याख्या :

- विकल्प (B) भुगतान संतुलन घाटे को सही ढंग से परिभाषित करता है। यह तब होता है जब कोई देश निर्यात की तुलना में अधिक माल, सेवाओं और पूंजी का आयात करता है, जिससे उसके अंतरराष्ट्रीय लेनदेन में नकारात्मक संतुलन होता है। इस घाटे के कारण देश को अपने भुगतानों को संतुलित करने के लिए अपने विदेशी मुद्रा भंडार का उपयोग करने या बाहरी वित्तपोषण की तलाश करने की आवश्यकता हो सकती है।

उत्तर : 7 विकल्प B सही है

व्याख्या :

- कथन 1: गलत। अफ्रीकी स्वाइन फीवर (ASF) केवल जानवरों से दूसरे जानवरों में फैलता है और मनुष्यों को प्रभावित नहीं करता है।

- कथन 2: सही है। क्लासिकल स्वाइन फीवर (ASF) एक वायरस के कारण होता है जो गोजातीय वायरल डायरिया और बॉर्डर रोग पैदा करने वाले वायरस से काफी हद तक संबंधित है।
- कथन 3: सही है। ASF की मृत्यु दर बहुत अधिक है, जो 95% से 100% तक है।
- कथन 4: गलत। भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान ने सेल कल्चर ASF वैक्सीन विकसित की है, न कि लाइव एटेन्यूएटेड वैक्सीन।
- इसलिए, सही उत्तर (B) केवल 2 और 3 है।

उत्तर : 8 विकल्प B सही है

व्याख्या :

- ULLAS -नव भारत साक्षरता कार्यक्रम का उद्देश्य 15 वर्ष या उससे अधिक आयु के वयस्कों को सशक्त बनाना है, जो औपचारिक स्कूली शिक्षा से वंचित रह गए हैं। इसके लिए उन्हें मूलभूत साक्षरता, महत्वपूर्ण जीवन कौशल, बुनियादी शिक्षा, व्यावसायिक कौशल और सतत शिक्षा प्रदान की जाती है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप है और शैक्षिक संसाधनों के लिए दीक्षा पोर्टल जैसे प्लेटफॉर्म का उपयोग करता है।

उत्तर : 9 विकल्प A सही है

व्याख्या :

- कथन 1 सही है। सम्पूर्णता अभियान का लक्ष्य 500 आकांक्षी ब्लॉकों और 112 आकांक्षी जिलों में 12 प्रमुख सामाजिक क्षेत्र संकेतकों में संतृप्ति प्राप्त करना है। कथन 2 गलत है क्योंकि अभियान इस वर्ष सितंबर तक जारी रहने वाला है, कैलेंडर वर्ष के अंत तक नहीं।

उत्तर : 10 विकल्प C सही है

व्याख्या :

- आकांक्षी जिला कार्यक्रम के तहत प्रमुख संकेतकों में कार्यात्मक बिजली वाले स्कूल, पूरी तरह से टीकाकरण वाले बच्चे (9-11 महीने), और मधुमेह और उच्च रक्तचाप की जांच शामिल हैं। हालाँकि, "मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार करना" आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम के तहत एक प्रमुख संकेतक है, न कि आकांक्षी जिला कार्यक्रम के तहत। इसलिए, विकल्प (C) सही है क्योंकि यह आकांक्षी जिला कार्यक्रम के तहत एक प्रमुख संकेतक नहीं है।

GEO IAS It's about quality

GEO IAS

It's about quality

ABOUT US

GEO IAS is the best institute for civil services in India for providing top quality teaching and materials, offering you most optimum path for your success in Civil Services exam. Our aim is to provide quality training with an affordable fee structure. Our uniquely designed course make us the best institute for UPSC to crack the exam in one go. We have a dedicated team of experienced and young teachers and counsellors who make sure that every student who joins the institute, must get customized way of preparation which matches with student's learning style.
The only institute of UPSC in India which has 3 AI enabled Mobile apps. We believe in Smart way of teaching and learning. The classes are available in offline as well as in online mode. We take the help of animation so that you may visualize the lectures. Unlimited tests for prelims and mains with solution in both form (Hard copy and soft copy). We have the set of 15 lac mcqs on each topic. We provide daily news analysis, Highlighted news paper and links of important Sansad TV shows. The institute has best success rate with more than 230 students have cleared the exam. HIGHEST RATED INSTITUTE as per GOOGLE, SULEKHA and JUST DIAL and the magazine on civil services

+91-9477560001 /002/005

BRANCH: Delhi Kolkata, Raipur, Patna | HEAD OFFICE: 641, Ramlal Kapoor Marg, Mukherjee Nagar, Delhi, 110009

info@geoias.com

www.geoias.com